(1) हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे उस रूप का करे– चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं; क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है, और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

अथवा हम लोग ..... **लेनी** पड़ती है।

अथवा हम लोग .....सहारा रहता है।

प्रश्न – (i) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- ***पाठ–*** मित्रता। ***लेखक –*** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न – (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या**– शुक्लजी **जी के कथनानुसार**, हमारी अवस्था ऐसी होती है, जैसे कच्ची मिट्टी की मूर्ति होती है जिसे तोड़कर किसी भी प्रकार का रूप दिया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि संसार की वास्तविकता का ज्ञान न होने के कारण बालक को कैसा भी रूप दिया जा सकता है। कोई दुष्ट व्यक्ति अपना बुरा और अपवित्र प्रभाव डालकर हमें राक्षसों की तरह नीच और दुष्ट बना सकता है। इसके विपरीत यदि हमें अच्छी संगति मिल जाए तो देवताओं की भाँति हमारे जीवन में भी अच्छे गुण आ सकते हैं। **शुक्ल जी का मत** है कि यदि हम बिना सोचे-विचारे उन लोगों की संगति में आ जाते हैं, जिनकी इच्छा शक्ति हमसे अधिक **प्र**बल है और जिनके संकल्प दृढ़ हैं तो हम अपना विकास किसी भी हैं प्रकार नहीं कर सकते।

प्रश्न – (iii)'हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं– इस वाक्य में 'हम लोग'से किसकी ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- 'हम लोग कच्ची मिट्टी'की मूर्ति के समान रहते हैं'इस वाक्य में 'हम लोग'से किशोरावस्था के बच्चों की ओर संकेत किया गया है।

प्रश्न – (iv)व्यक्ति समाज में किस अवस्था में प्रवेश करता है?

उत्तर- व्यक्ति समाज में किशोरावस्था में प्रवेश करता है।

प्रश्न – (v) दृढ़-संकल्पवाले लोगों का साथ करना बुरा क्यों होता है?

उत्तर- दृढ़-संकल्पवाले लोगों का साथ करना इसलिए बुरा होता है; क्योंकि व्यक्ति उनकी प्रत्येक बात को बिना किसी विरोध के चुपचाप मान लेता है। इससे व्यक्ति का अपना विवेक कुण्ठित होता है। उसकी तर्कशक्ति भी बाधित होती है। इस प्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व कमजोर होता जाता है। एक प्रकार से व्यक्ति दब्बू बन जाता है।

प्रश्न – (vi) हमें किन लोगों का साथ करना चाहिए?

उत्तर- हमें उन लोगों का साथ करना चाहिए, जो हमारे ही समान इच्छाशक्ति वाले हों; हमारी बातों को चुपचाप स्वीकार न करके उसे तर्क और विवेक की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार **अथवा** अस्वीकार करें।

(2) रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये, वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी – हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है— तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था?

अथवा

ममता विधवा.....अन्त था?

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'ममता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक 'जयशंकर प्रसाद जी'**हैं**|

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – जिस प्रकार सोन नदी उफनकर बह रही है, उसी प्रकार ममता का यौवन भी पूरी तरह उफान पर है। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री है। वह हर प्रकार के भौतिक सुख से सम्पन्न है, फिर भी हिन्दू-विधवा-जीवन के कठोर अभिशाप से उसका मन तरह-तरह के विचारों और भावों की आंधी से भरा हुआ है। उसकी आँखों से दुःख के आँसू बह

रहे हैं। काँटों की शय्या पर सोनेवाला व्यक्ति जिस प्रकार हर पल बेचैन रहता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के भौतिक सुखों के रहते हुए भी ममता का जीवन कष्टदायक सिद्ध हो रहा है।

प्रश्न- (iii)रोहतास-दुर्ग कहाँ स्थित है?

उत्तर- रोहतास-दुर्ग सोन नदी के तट पर स्थित है।

प्रश्न- (iv)ममता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्ग के दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री थी। वह युवा और विधवा थी। उसके मन-मस्तिष्क में विरह-वेदना के कारण उथल-पुथल मची थी, जिस कारण उसकी आँखों में दुःख के आँसू थे।

प्रश्न- (v)उपर्युक्त गद्यांश में हिन्दू विधवा की स्थिति कैसी है?

उत्तर- समाज में हिन्दू-विधवा की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती है। उसे समाज का सबसे तुच्छ (दीन-हीन) और बेसहारा प्राणी माना जाता है।

प्रश्न- (vi)ममता कौन थी? वह क्या देख रही थी?

उत्तर- ममता रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की विधवा पुत्री थी। वह अपने यौवन के समान उमड़ते शोण नदी के तीक्ष्ण प्रवाह को देख रही थी।

(3) **मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए०जी० गार्डिनर का कथन है, कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति- सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग - सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।**

प्रश्न-(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिंदी के गद्य खंड में संकलित निबंध 'क्या लिखूं?'से उद्धृत है इसके लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

प्रश्न-(ii) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - **रेखांकित अंश की व्याख्या**– अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्धकार ए.जी. गार्डिनर हुए हैं। जिन्होंने कहा है कि मन की विशेष स्थिति में ही निबन्ध लिखा जाता है। उसके लिए मन के भाव ही वास्तविक होते हैं, विषय नहीं। मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त हो सकता है। उनका कहना है कि उस समय मन में एक विशेष प्रकार का उत्साह और फुर्ती आती है। दिमाग में एक विशेष प्रकार की आवेगपूर्ण स्थिति बनती है और उस आवेग को उमंग के कारण विषय की चिन्ता किये बिना निबन्ध लिखने को बाध्य होना ही पड़ता है।

प्रश्न-(iii) उपर्युक्त गद्यांश में मनोभावों को क्या बताया गया है?

उत्तर -मनोभावों को यथार्थ वस्तु बताया गया है।

प्रश्न-(iv) लिखने की विशेष मानसिक स्थिति कैसी होती है?

उत्तर- लिखने की विशेष मानसिक स्थिति में मन में कुछ ऐसी उमंग - सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति - सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग - सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है।

(4) आज हम इसी निर्मल, शुद्ध, शीतल और स्वस्थ अमृत की तलाश में हैं और हमारी इच्छा, अभिलाषा और प्रयत्न यह है कि वह इन सभी अलग-अलग बहती हुई नदियों में अभी भी उसी तरह बहता रहे और इनको वह अमर तत्त्व देता रहे, जो जमाने के हजारों थपेड़ों को बरदाश्त करता हुआ भी आज हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए है और रखेगा। [801 (DA) 2023]

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ **लिखिए।**

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- भारतीय संस्कृति रूपी विशाल सागर में आकर गिरनेवाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध स्वच्छ, शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक, कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित

उसी अमृत तत्त्व की तलाश है, हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में यह अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, तथापि भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्त्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है।

प्रश्न- (iii)हमारे अस्तित्व को कौन कायम रखे हुए है?

उत्तर- भारतीय संस्कृति का एकता तत्त्व ही वह अमृत है, जो हमारे अस्तित्व को कायम रखे हुए हैं।

प्रश्न- (iv)भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल किसके द्वारा मलिन हो गया है?

उत्तर- स्वयं को दूसरे से भिन्न और श्रेष्ठ मानने की हमारी विषमता और अनेकता की भावना के द्वारा भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर का जल मलिन हो गया है।

(5) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है।

प्रश्न- (i) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ-** प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के भाग 'गद्य-संकलन' में संकलित एंव श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से' नामक मनोवैज्ञानिक निबन्ध से उद्धृत है।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- **प्रथम रेखांकित अंशों की व्याख्या** - प्रस्तुत अंश में दिनकर जी कहते है कि ईर्ष्या अपने भक्त को एक विचित्र प्रकार का वरदान देती है और वह सदैव दुःखी रहने का वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है, वह अकारण ही कष्ट भोगता है। वह अपने पास विद्यमान अनन्त सुख-साधनों के उपभोग द्वारा भी आनन्द नहीं उठा पाता; क्योंकि वह दूसरों की वस्तुओं को देख-देखकर मन में

जलता रहता है।

द्वितीय रेखांकित अंशों की व्याख्या - लेखक का कहना है कि जब ईर्ष्यालु मनुष्य यह देखता है कि कोई वस्तु किसी अन्य के पास है लेकिन उसके पास नहीं है तो उसके मन में पनपी यह अभाव की भावना सदैव उसे डंक मारती रहती है। लेखक का कहना है कि डंक से उत्पन्न कष्ट को सहन करना उचित नहीं है। लेकिन ईर्ष्यालु मनुष्य कष्ट को सहन करने के अतिरिक्त और कुछ कर भी नहीं सकता।

प्रश्न- (iii) मनुष्य दुःख क्यों उठाता है?

उत्तर- जो वस्तुएं दूसरों के पास हैं उन वस्तुओं से वह मनुष्य दुःख उठाता है

(6) जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए आदमी ने पहाड़ काटा है। किस तरह इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचाई जाय, इसके लिए आदमी ने कितने ही उपाय सोचे और किए। उसने चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों से ऊँचे, धातुओं से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किए, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे और उसके जीवन-मरण की कहानी सदियों के उतार पर सरकती चली आ रही है, जो आज हमारी अमानत - विरासत बन गई है।

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'अजन्ता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से स्वतन्त्र करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। वह केवल कामना ही करता नहीं आ रहा, वरन् इसके लिए निरन्तर अथक प्रयास भी करता रहा है। वह अपने शरीर को तो अमर न बना सका, किन्तु अपने जीवन के अविस्मरणीय पलों को अमर बनाने में अवश्य सफल रहा है। इसके लिए उसने पर्वत की गुफाओं को काटकर अपने जीवन के उन पलों को उनमें उकेरकर उन्हें सदैव के लिए अमर कर दिया। इसके अतिरिक्त भी मनुष्य ने अपनी विशेषताओं की कहानी से सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों का परिचय कराने के लिए अनेक उपाय सोचे और उनको मूर्त रूप भी प्रदान किया। मानव के जीवन-मरण की

कहानी अनादिकाल से आज सदियों बाद भी उसी रूप में हमारे सामने प्रकट होती चली आ रही है। मानव की यह कहानी और उसके उद्घाटन के ये सभी उपकरण **अथवा**साधन आज हमारी अमूल्य धरोहर बन गए हैं। हमें इस पर गर्व भी है और अपने गौरव का अभिमान भी।

प्रश्न- (iii)**आदमी ने पहाड़ क्यों** काटा?

उत्तर- आदमी ने जिन्दगी को मौत के पंजों से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए पहाड़ काटा।

प्रश्न- (iv)इंसान की खूबियों को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने कौन-कौन से उपाय किए?

उत्तर- इंसान की खूबियों की कहानी सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए आदमी ने चट्टानों पर अपने सन्देश खोदे, ताड़ों से ऊँचे, धातुओं से चिकने पत्थर के खम्भे खड़े किए; ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के मोती बिखेरे।

प्रश्न- (v) क्या चीज आज हमारी विरासत बन गई है?

उत्तर- सदियों पहले आदमी द्वारा चट्टानों पर खोदे गए सन्देश, ताड़ों से ऊँचे और धातुओं से चिकने खड़े किए गए चिकने पत्थर के खम्भे, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के बिखेरे गए मोती आज हमारी विरासत बन गए हैं।

प्रश्न- **(vi)अजन्ता की गुफाओं के निर्माण का क्या उद्देश्य रहा है?**

उत्तर- मनुष्य की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाकर उसका ज्ञान सदियों बाद आनेवाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से अजन्ता की गुफाओं का निर्माण किया गया।

(7) दुनिया के सभी भागों में स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाए बैठे थे, जिनके पास टेलीविजन थे, वे उसके पर्दे पर आँखें गड़ाए थे। मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना के एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे उत्सुकता और कुतूहल के कारण अपने अस्तित्व से बिल्कुल बेखबर हो गए थे।

प्रश्न- (i) **उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर- सन्दर्भ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'गद्य खण्ड' में संकलित **'पानी में चन्दा और चाँद पर आदमी'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक **'जयप्रकाश भारती'** हैं।

प्रश्न- (ii) रोमांचक घटना के भागीदार कौन बन रहे थे?

उत्तर- संसार के समस्त व्यक्ति अर्थात् सभी स्त्री-पुरुष और बालक जो रेडियो पर मानव के चाँद पर उतरने की खबर सुन रहे थे, इस रोमांचक घटना के भागीदार बन रहे थे।

प्रश्न- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिये।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** - लेखक कहता है कि मानव का चन्द्रमा पर उतरना मनुष्य के अब तक के इतिहास की सबसे अधिक रोमांचक घटना थी। दुनिया के सभी स्थानों के स्त्री-पुरुष और बच्चे इस महत्त्वपूर्ण घटना के इस अद्भुत क्षण का हिस्सा बन रहे थे। यह सब सुनकर प्रत्येक व्यक्ति उत्सकुता और आश्चर्य से अपने आप से बेखबर हो गया था। अर्थात् वे अपनी सुध-बुध खो बैठे थे।

प्रश्न- (iv) किसके कारण लोग अपने अस्तित्व से बिल्कुल बेखबर हो गए थे।

उत्तर- उत्सुकता और कुतूहल के कारण लोग अपने अस्तित्व से बिल्कुल बेखबर हो गए थे।

महत्वपूर्ण पद्यांश

(1) मेवाड़-केसरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह मान-रक्त का प्यासा था।।
चढ़कर चेतक परघूम-घूम,

करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, श्लेष, उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश तथा अतिशयोक्ति, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण- ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-**व्याख्या**- हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ केसरी अर्थात् राणा प्रताप केवल युद्ध का तमाशा ही नहीं देख रहे थे, अपितु वह दौड़-दौड़कर इस प्रकार युद्ध कर रहे थे मानो वह शत्रु सेना का नेतृत्व करने वाले मानसिंह के रक्त के प्यासे हों। राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक पर सवार होकर अपनी सेना की रखवाली करते हुए इस प्रकार युद्ध कर रहे थे जैसे मानो अपने साथ मृत्यु का प्रलयंकारी भीषण रूप लिए साक्षात् महाकाल युद्धभूमि में आ धमका हो।
3. **प्रस्तुत पद्यांश में मेवाड़ केसरी किसे कहा गया है?**
   उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप को कहा गया है ।
4. **'कपाली' तथा 'मेवाड-केसरी' का क्या अर्थ है?**
   उत्तर -**'कपाली'** का अर्थ- महाकाल, शिव, 'महादेव' अथवा भैरव है ।
   मेवाड़ केसरी- मेवाड़ का सिंह (राणाप्रताप)

(2) एक युवा जंगल मुझे,
अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।
मेरी शिराओं में हरा रक्त बहने लगा।
आँखों में हरी परछाइयाँ फिसलती हैं
कन्धों परएक हरा आकाश ठहरा है
होंठ मेरे एक हरे गान में काँपते हैं-

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपयुक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या-कवि कहते हैं कि हरे-भरे युवा जंगल को देखकर ऐसा लगता है, मानो नए वृक्षों वाला युवा जंगल उत्साहित होकर आकाश को छूने को उत्सुक अपनी पतली-पतली टहनियों से उसे बुला रहा हो। युवा जंगल के आमन्त्रण से कवि की सूखी नसों में स्थित निराशा की भावना दूर हो जाती है तथा उनमें उत्साह और आशा का संचार होने लगता है। इस आमन्त्रण से कवि की आँखों में सुखद और सुनहरे भविष्य के सपने तैरने लगते हैं, अब कवि के जीवन का उद्देश्य बदल गया है और वह अपने कन्धों पर उस उत्तरदायित्व को महसूस कर रहा है, जिससे उसकी जीवनरूपी निराशा समाप्त हो गई है।
   निराशा के कारण सूखकर कड़े हो चुके होंठों से जो हरियालीरूपी हँसी गायब हो चुकी थी, वह वृक्ष के आमन्त्रण से आशा एवं उत्साह का रस पाकर सरस हो उठी है अर्थात् जीवन के नए गीत गाने के लिए उत्सुक है। कवि को ऐसा लगता है, मानो वह व्यक्ति न होकर एक हरा-भरा पेड़ बन

गया हो, जिसमें उत्साहरूपी हरी पत्तियों की आशा भर गई हो। कवि स्वयं को उत्साह से परिपूर्ण हरे-भरे लहराते युवा पेड़ों की तरह महसूस कर रहा है।

3. **युवा और जंगल के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

उत्तर- **युवा**- जवान, नवयुवक

जंगल- वन, कानन

(3) अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जायेगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जायेगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत, छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-**व्याख्या-** कवि मानव जीवन में नदी का महत्त्व बताते हुए कहता है कि अगर हम संसार के साथ सामान्य गति से चलते हैं तो नदी भी हमारे साथ हमें स्पर्श करके चलती है। यदि कोई व्यक्ति आधुनिकता की दौड़ में संस्कृति को अनदेखा कर देता है तो यह नदी उससे दूर हो जाती है। यदि संस्कृति के साथ-साथ चलता है तो नदी भी उसका अनुसरण करती है। व्यक्ति उसे किसी भी स्थान पर ले जाए यहाँ तक की कबाड़ी की दुकान जैसे सामान्य स्थान पर, वहाँ भी उसके साथ चलती चली जायेगी।

3. **उपर्युक्त पद्यांश में कवि नदी के माध्यम से किसके बारे में बात कर रहा है?**

उत्तर-कवि नदी के माध्यम से संस्कृति के बारे में बात कर रहा है।

(4) भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभएक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत छन्द-मुक्तक, अलंकार-अनुप्रास, पुन:क्तिप्रकाश, भाषा-सरल खड़ी बोली हिन्दी, गुण-प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर-उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या- इन पंक्तियों में कवि अपने देश (भारतभूमि) को भारत माता का मंदिर बताते हुए कहता है कि भारत माता का यह ऐसा मंदिर है जिसमें समानता की ही चर्चा होती है। यहाँ पर सभी के कल्याण की वास्तविक कामना की जाती है और यहीं पर सभी को परम सुखरूपी प्रसाद की प्राप्ति होती है। इस मंदिर की यह विशेषता है कि यहाँ पर जाति-धर्म या संप्रदाय वाद का कोई भेदभाव नहीं है अर्थात् इस मंदिर में ऐसा कोई व्यवधान या समस्या नहीं है कि कौन किस वर्ग का है सभी समान हैं। सभी का स्वागत है और सभी को बराबर सम्मान है। कोई किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला हो; चाहे वह हिन्दुओं के इष्टदेव राम हों, मुस्लिमों के इष्ट रहीम हों, चाहे बौद्धों के इष्ट बुद्ध हों या चाहे ईसाइयों के इष्ट ईसा मसीह हों अर्थात् इस मंदिर में सभी को बराबर सम्मान है, सभी के स्वरूप का बराबर-बराबर चिन्तन किया जाता है। सभी की ही बराबर पूजा की जाती है।

3. **कवि ने किसे भारतमाता के मन्दिर का प्रतीक माना है?**

उत्तर- कवि ने अपने देश (भारतभूमि) को भारत माता का मंदिर का प्रतीक माना है।

4. **भारत में जाति, धर्मएवं सम्प्रदाय की कोई समस्या नहीं है। इसे स्पष्ट करें।**

उत्तर- इस मंदिर की यह विशेषता है कि यहाँ पर जाति-धर्म या संप्रदाय वाद का कोई भेदभाव नहीं है यानि इस मंदिर में ऐसा कोई व्यवधान या समस्या नहीं है कि कौन किस वर्ग का है। सभी समान हैं। सभी का स्वागत है और सभी को बराबर सम्मान है। कोई किसी भी सम्प्रदाय को मानने वाला हो; चाहे वह हिन्दुओं के इष्टदेव राम हों, मुस्लिमों के इष्ट रहीम हों, चाहे बौद्धों के इष्ट बुद्ध हों या चाहे ईसाइयों के इष्ट ईसा मसीह हों यानी इस मंदिर में सभी को बराबर सम्मान है, सभी के स्वरूप का बराबर-बराबर चिन्तन किया जाता है। सभी की ही बराबर पूजा की जाती है। अतः भारत में जाति, धर्मएवं संप्रदाय की कोई समस्या नहीं है।

(5) इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी
जल कर जिसने स्वतन्त्रता की,
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, भाषा-साहित्यिक हिन्दी, गुण-ओज।

1. **प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

उत्तर-उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-**व्याख्या-** इस समाधि में वीरांगना लक्ष्मीबाई की राख छिपी हुई है, जिसमें जलकर स्वतंत्रता की अलौकिक आरती उतारी थी यह छोटी सी समधि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की है, जिन्होंने पुरुषों के समान साहस दिखाया यह समाधि रानी की अन्तिम कर्मस्थली है।

3. **कवयित्री ने किसकी समाधि पर अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं?**

उत्तर-झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि पर।

(6) चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

काव्यगत सौंदर्य-रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, पुन:क्तिप्रकाश, भाषा-परिमार्जित खड़ी बोली, गुण-ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या- पं० माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं कि पुष्प के मन में अन्य किसी भी प्रकार का सम्मान पाने की अभिलाषा नहीं है। पुष्प कहता है कि मेरी इच्छा यह नहीं है कि मैं किसी देवकन्या के आभूषणों में गुँथकर सुख प्राप्त करूँ। मेरी इच्छा यह भी नहीं है कि किसी प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए बनाई गई माला में बिंधकर प्रेमिका को आकर्षित करूँ। न मैं महामहिम सम्राटों के शवों पर चढ़ाया जाकर राजकीय सम्मान पाना चाहता हूँ और न श्रद्धालु भक्तों द्वारा पूज्य देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़कर अपने भाग्य पर अभिमान ही करना चाहता हूँ। इस प्रकार के किसी भी सम्मान को पुष्प व्यर्थ और निरर्थक मानता है।
   पुष्प अपनी अभिलाषा प्रकट करता हुआ कहता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में फेंक देना, जिस मार्ग से होकर देश के वीर जवानों की टोलियाँ अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ देने के लिए जाएँ। इस प्रकार पुष्प बलिदान के मार्ग में स्वयं को अर्पित किए जाने में ही सुख का अनुभव करता है।
3. **उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त रस व छन्द का नाम लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त काव्यगत-सौन्दर्य के अन्तर्गत देखें।
4. **पुष्प की अन्तिम अभिलाषा क्या है?**
   उत्तर- पुष्प अपनी अभिलाषा प्रकट करता हुआ कहता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में फेंक देना, जिस मार्ग से होकर देश के वीर जवानें की टोलियाँ अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ देने के लिए जाएँ।

महत्वपूर्ण संस्कृत गद्यांश पद्यांश

(1) वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी। इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता। अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पंक्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते। अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति, अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति। वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते।

अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः।

नितरां नीचोऽस्मीति त्वं खेदं कूप ! कदापि मा कृथाः ।

अत्यन्तसरसहृदयो यतः परेषां गुणग्रहीताऽसि।। 1

(2) **अनुवाद** -हे कुएँ ! "(मैं) अत्यधिक नीच (गहरा) हूँ" -तुम इस प्रकार कभी भी खेद मत करो; क्योंकि (तुम) अत्यन्त सरस-हृदय (जल से पूर्ण) हो (और) दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करनेवाले हो।

(3) नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्

विश्वमिस्मन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः।। 2

हे हंस! यदि तुम ही नीर और क्षीर का विवेक करने में आलस्य करोगे। (तो) इस संसार में ऐसा कौन है, जो अपने कुलव्रत का पालन करेगा ?

(3) (स्थानम् - अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्) अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तते। वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः।

सेनापतिः: विजयतां सम्राट्।

पुरुराजः: एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते।

अलक्षेन्द्रः: (साक्षेपम्) अहो ! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज?

पुरुराजः: यवनराज ! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा।

अलक्षेन्द्रः: किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।

पुरुराजः: पराक्रमते, यदि अवसरं लभते। अपि च यवनराज !

बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।

उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता।।

अनुवाद - (स्थान- सिकन्दर का सैनिक शिविर) सिकन्दर और आम्भीक बैठे हैं।
बन्दी पुरुराज को आगे करके एक ओर से यवन सेनापति प्रवेश करता है।
सेनापति - सम्राट् की जय हो !
पुरुराज - यह भारतवीर भी यवनराज का अभिवादन करता है।

सिकन्दर –(आक्षेप सहित) अरे ! पुरुराज ! बन्धन में पड़े हुए भी अपने को वीर मानते हो?
पुरुराज हे यवनराज ! सिंह तो सिंह ही है, वन में हो अथवा पिंजरे में।
सिकन्दर – किन्तु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता है।
पुरुराज - पराक्रम करता है, यदि अवसर मिलता है। और हे यवनराज !
"बन्धन हो अथवा मृत्यु, जय हो अथवा पराजय; "
वीर पुरुष दोनों स्थितियों में समान रहता है। वीर - भाव को ही 'वीरता 'कहते हैं।

हास्य रस

परिभाषा-

किसी की विकृत वेशभूषा, चेष्टा आदि को देखकर जब 'हास' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब हास्य रस की निष्पत्ति होती है।

जैसे –

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली ।।

पुनि-पुनि मुनि उमगहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।"

स्पष्टीकरण- स्थायी भाव- हास

विभाव - आलम्बन - नारद मुनि आश्रय- हर-गन
उद्दीपन- विलक्षण आकृति, चेष्टा ।
अनुभाव- हँसना, खड़े होना, भागना।
संचारी भाव- हर्ष, चपलता, चंचलता ।

अन्य उदाहरण-

बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
ह्वैहैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि काननु को पगु धारे।।

हँसि हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को
पाहुनि जे आवै हिमाँचल के उछाह में।

शीश पर गंगा हंसे भुजनि भुजंगा हंसे
हास ही को दंगो भयो नंगा के विवाह में।।

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली।।
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसुकाहीं।।